

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

ISSN 2349-1906

साहित्य

वर्ष 9 अंक 39 जुलाई-सितम्बर, 2024

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

संपादक
कलानाथ मिश्र



राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति विकास समिति सिमरिया की ओर से आयोजित 'दिनकर जयंती' के अवसर पर बरौनी जीरोमाइल स्थित दिनकर जी की विराट प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए प्रो. मिथिलेश सिंह, साहित्य यात्रा के संपादक प्रो. कलानाथ मिश्र, कवि मदन कश्यप, प्रो. सत्यकाम, साहित्य यात्रा के सहयोगी संपादक डॉ. अमित कुमार मिश्रा आदि।



राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति विकास समिति, सिमरिया की ओर से आयोजित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती के अवसर पर साहित्य यात्रा के यशस्वी संपादक वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. कलानाथ मिश्र को सम्मानित करते हुए प्रलेश, बेगूसराय जिला इकाई के सचिव, साहित्यकार श्री राजकिशोर सिंह।

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक

कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेपफरेन्स नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा.....

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक :		हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
----------	--	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com



यहाँ से काटिए



साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-9

अंक-39

जुलाई-सितम्बर, 2024

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी

संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय
(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. अमित कुमार मिश्रा

कार्यालय सहयोग

प्रिया कुमारी

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी आलेख का पुनर्प्रकाशन के पूर्व संपादक की अनुमति अनिवार्य है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,

अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713/9546138889

ई-मेल : sahiyayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैग्जीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

- आर.के. मैग्जीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,

पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
संस्मरण	
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : गँवई धज में खिला-खिला सा व्यक्तित्व प्रकाश मनु	11
आलेख	
अजीत कुमार वर्मा की कविताई डॉ. कमलानंद झा	25
नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और विकास डॉ. श्वेता दीप्ति	32
समकालीन हिंदी कविता : यथार्थ और संवेदन में द्वंद्व गणेश चन्द्र राही	44
राष्ट्रीय चेतना के कवि : बालकृष्ण शर्मा नवीन राजेन्द्र परदेसी	60
क्या वर्तमान साहित्य जगत ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र को भुला दिया है? राजेन्द्र सिंह गहलोत	65
कहानी	
पाँच मुठ्ठी मिट्टी डॉ. निरूपमा राय	70
प्यार की धार डॉ. गोपाल कृष्ण शर्मा 'मृदुल'	77
आलेख	
बाल मनोविज्ञान के कुशल चितरे-प्रेमचंद पद्मा मिश्रा	87
हिंदी साहित्य लेखन में आधुनिक प्रवृत्तियाँ डॉ. कविता विकास	92
बदल रहा है प्रेमचंद का लमही गाँव सुशील स्वतंत्र	98
संस्मरण	
मन की बात सुधा गोयल	102

पुस्तक समीक्षा

- ब्रेड एण्ड बुक (संस्मरण) श्री रामकिशोर उपाध्याय 105
डॉ. जमुना कृष्णराज

आलेख

- डॉ. यायावर की सजलों में नवगीत के तत्व 114
कृष्ण कुमार 'कनक'

- मुंशी प्रेमचंद जी की कुर्सी 126
डॉ. मुकेश 'असीमित'

- हरियाणवी साहित्यकार : बाबू बालमुकुंद गुप्त - परिचयात्मक विश्लेषण 130
डॉ. (श्रीमती) धनेश्वरी दुबे

- विभूति नारायण राय के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना 135
ज्योति कुमारी

साहित्यिक रिपोर्ट

- यशस्वी साहित्यकार रामदरश मिश्र के स्वर्णिम सौ वर्ष पर आयोजन 140
वेद मित्र शुक्ला / प्रियांशु तथा अनन्या

कविता

- कौन था वह? 145
श्री पारस कुंज

- चीखें 150
आभास कुमार

- इठलाती नदियाँ 151
करुणा पीटर 'कमल'

गज़ल

- गज़ल 152
अजीत कुमार वर्मा

सम्पादकीय

स्वतंत्र चेतना के सजग साहित्यकार : रामदरश मिश्र

साहित्यकार का सबसे बड़ा गुण उसका स्वतंत्र चिंतन और सजग लेखन होता है। साहित्यकार जितना स्वतंत्र होगा, उसकी लेखनी में सामाजिक यथार्थ का उतना ही सजीव चित्रण होगा। किसी भी साहित्यकार का आधारभूत गुण समाज के वंचितों के प्रति उसकी संवेदना होती है। संवेदना ही वह तत्व है, जो किसी रचनाकार के भीतर प्रतिरोध चेतना को जन्म देती है। प्रगतिशीलता भी साहित्यकार का मौलिक धर्म है, उसे किसी से उधार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

आदि कवि वाल्मीकि के भीतर वह संवेदना ही थी, जिसके कारण उन्होंने निषाद को शापित किया। निषाद ने जब क्रौंच पक्षी के एक जोड़े में से एक को मार गिराया तो वाल्मीकि के हृदय में इतनी संवेदना जागृत हुई कि उन्होंने निषाद के इस दुष्कृत्य का प्रतिरोध करते हुए शाप दे डाला -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम्।।

डॉ. रामदरश मिश्र स्वतंत्र चेतना के साहित्यकार हैं और साहित्यकार के दायित्वों के प्रति अत्यंत सजग हैं।

15 अगस्त को देश आजाद हुआ और 15 अगस्त को ही रामदरश मिश्र जी का जन्म दिवस भी है। यह एक सुसंजोग है। शायद यही कारण है कि मिश्र जी की लेखनी इतनी स्वतंत्र है। न कोई वाद, न कोई खेमा, बस केवल लिखना और लिखते रहना। उन्होंने विपुल साहित्य की रचना की है। मूल रूप से कवि हृदय किन्तु साहित्य के सभी विधाओं में महत्वपूर्ण लेखन किया है। उन्होंने कई कविता संग्रह, अनेक उपन्यास, कई कहानी संग्रह, कई समीक्षा ग्रंथ, निबंध संग्रह, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी सभी विधाओं में समान अधिकार के साथ अपनी सर्जनात्मकता को आकार दिया है। उनकी रचनाओं में भाव और भाषा का सहज प्रवाह, और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था का भाव मिलता है।

समाज के प्रति उनकी सजगता वंचितों के हक के लिए संघर्ष करती दिखती है। चाहे वह शहरी जीवन का चित्रण हो अथवा ग्रामीण जीवन का चित्रण हो। यह सच है कि आज साहित्य में गाँव का दखल कम हुआ है, किंतु गाँव और गवई संस्कृत में आज भी अपार रस है।

अपनी रचनाओं में गाँव के इसी सच को बसाए रखने वाले प्रखर साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र कहते हैं-